M.A. Semester - II
Philosophy C.C. - 08
Unit — II

Prof. Ragini Kumari
Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

शंकर का ब्रह्म सम्बन्धी सिद्धान्त
(भाग - I)

शंकर का ब्रह्म विचार अन्य उपनिषदीय विचारधारा की देन है। शंकर एक तत्ववादी है वे ब्रह्म को ही एकमात्र सत्य मानते हैं। ब्रह्म को छोड़कर शेष सभी वस्तुएँ - जगत, ईश्वर - सत्य नहीं है।

शंकर के अनुसार सत्ता की तीन कोटियाँ हैं —

(1) पारमार्थिक सत्ता
(2) व्यवहारिक सत्ता
(3) प्रातिभासिक सत्ता

ब्रह्म को वे पारमार्थिक - दृष्टि से पूर्णतः सत्य माना है तथा इस ब्रह्म को ही एकमात्र सत्य माना है। ब्रह्म प्रकाश की तरह ज्योतिर्मय है इसलिए ब्रह्म को स्वयं प्रकाश कहा गया है।

फिर ब्रह्म को सब विषयों का आधार कहा गया है, यद्यपि कि यह द्रव्य नहीं है। ब्रह्म दिक् और काल की सीमा से परे है। ब्रह्म पर कारण नियम भी नहीं लागू होता है।

शंकर ने ब्रह्म को निर्गुण कहा है। उपनिषद् में सद्गुण और निर्गुण - ब्रह्म के दोनों रूपों की व्याख्या हुई है। यद्यपि ब्रह्म निर्गुण है

फिर भी ब्रह्म को शून्य नहीं समझा जा सकता है। उपनिषद् ने भी निर्गुणों गुणी कहकर निर्गुण को भी गुण युक्त माना है।

शंकर के अनुसार ब्रह्म पूर्ण एवं एकमात्र सत्य है। ब्रह्म का साक्षात्कार ही चरम लक्ष्य है। वह सर्वोच्च ज्ञान है। ब्रह्म ज्ञान से संसार का ज्ञान जो मूलतः अज्ञान है, समाप्त हो जाता है। ब्रह्म अनन्त, सर्वव्यापी तथा सर्वशक्तिमान है। वह भूत जगत् का आधार है। जगत् ब्रह्म का विवर्त है परिणाम नहीं। शंकर ने केवल इसी अर्थ में ब्रह्म को विश्व कारण माना है। इस विवर्त से ब्रह्म पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार एक जादूगर अपने ही जादू से ठगा नहीं जाता है। अविद्या के कारण ब्रह्म नाना रूपात्मक जगत् के रूप में दीखता है। शंकर के अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है, जगत् मिथ्या है।

ब्रह्म को सभी प्रकार के भेदों से रहित कहा है। वेदान्त दर्शन में तीन प्रकार के भेद माने गये हैं

(1) सजातीय भेद
(2) विजातीय भेद
(3) स्वगत भेद।

एक ही प्रकार की वस्तुओं के बीच जो भेद होता है, उसे सजातीय भेद कहा जाता है जैसे एक गाय और दूसरी गाय। जब दो असामान्य वस्तुओं में भेद होता है तब उस भेद को विजातीय भेद कहते हैं। गाय और घोड़े में जो भेद है वह विजातीय भेद है। एक ही वस्तु और

इसके अंशों में जो भेद होता है उसे स्वगत भेद कहा जाता है। गाय के सींग और पुच्छ में जो भेद होता है उसे स्वगत भेद कहा जाता है। किन्तु शंकर का ब्रह्म इन तीनों प्रकार के भेदों से परे है। रामानुज में ब्रह्म को स्वगत भेद से युक्त माना है, क्योंकि ब्रह्म में चित और अचित दोनों अंश एक दूसरे से भिन्न है।

शंकर ने ब्रह्म को ही आत्मा कहा है। इसलिए शंकर के ब्रह्म और आत्मा समान है।

शंकर ने ब्रह्म को स्वयं सिद्ध कहा है। अतः इसे सिद्ध करने के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

— To be continued —